Sem-III Identification of Problem of Research Pol. Sc.
MPOLCC-11 शोध-समस्या की पहचान या चयन Dr. S. B. Kr.

सामाजिक अनुसंधान (Social Research) में वैज्ञानिक पद्धति (Scientific methods) का प्रयोग किया जाता है। इस वैज्ञानिक पद्धति के अनेक चरण होते हैं जिनसे होकर शोधकर्ता को गुजरना पड़ता है। इस पद्धति में शोध कार्य आरंभ करने से लेकर सिद्धांत बनाने (Theory formulation) तक निश्चित चरण होते हैं।

सामाजिक अनुसंधान के चरणों (steps) को लेकर विभिन्न विद्वानों में मतभेद है फिर भी एक सामान्य अनुसंधान में अनेक चरण होते हैं जो इस प्रकार हैं:

1.) शोध-समस्या का चयन या पहचान (Selection of the problem)
2.) उपकल्पना या प्राकल्पना (Hypothesis)
3.) चरों का चयन (Selection of variables)
4.) निदर्शन या प्रतिचयन (Sampling)
5.) सामग्री का संकलन (Collection of Data)
6.) तथ्यों का विश्लेषण (Analysis of Data)
7.) रिपोर्ट लिखना (Report Writing)

उपरोक्त चरणों में शोध-समस्या का चयन या शोध के लिए विषय का चुनाव या शोध-समस्या की पहचान एक महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि शोध की दशा और दिशा बहुत हद तक समस्या की पहचान पर निर्भर करती है। किसी भी सामाजिक अनुसंधान का प्रारंभ किसी प्रश्न या समस्या से होता है। अतः प्रत्येक शोधकर्ता का यह सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह समस्या का चयन सावधानीपूर्वक करे। सावधानीपूर्वक ~~किया गया~~ समस्या का किया गया चयन आगे आने वाली अनेक समस्याओं से बचा सकता है। Cohen & Nagel का कहना है कि "हम किसी भी अध्ययन में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकते जब तक कि हम उसका प्रारंभ किसी सुझावपूर्ण विवेचना अथवा समस्या के समाधान से न करें।" आर॰ एल॰ एकॉफ ने कहा है कि "किसी समस्या का ठीक प्रकार से निर्धारण इसका आधा समाधान है।" (A problem well put is half solved). ऐसी समस्या का चयन किया जाना चाहिए जिसका वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन संभव हो सके। अनुसंधान के लिए समस्या का चयन करते समय यह देखना चाहिए कि समस्या से संबंधित आवश्यक तथ्य उपलब्ध हो सकें, उन तथ्यों को संकलित किया जा सके, शोधकार्य समय पर पूरा किया जा सके तथा समस्या के संबंध में सामान्यीकरण (generalisation) उपयोगी हो।

पी॰ वी॰ यंग ने समस्या या विषय के चयन में निम्नलिखित बातों पर बल दिया है:

Scanned with CamScanner

1) विषय ऐसा होना चाहिए जिसको समझने की शोधकर्ता स्वयं योग्यता रखता हो और जिससे संबंधित शोध एक निश्चित अवधि में पूरी की जा सके।

2) अध्ययन किए जाने वाले विषय से संबंधित यदि कोई अन्य शोध उपलब्ध नहीं हो तो विषय का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक नहीं होना चाहिए।

3) इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि उपलब्ध प्रविधियों (techniques) की सहायता से शोध कार्य किया जा सकता है या नहीं।

4) उस विषय या समस्या के सामाजिक शोध के अध्ययन से वैज्ञानिक निष्कर्ष निकाले जा सकेंगे या नहीं।

सैलिज, जहोदा एवं अन्य (Selltiz, Jahoda and Others) ने समस्या के चयन में तीन स्रोतों (Sources) का उल्लेख किया है:

1) अवलोकन द्वारा विषय-वस्तु में क्रमबद्ध तत्परता

2) उपलब्ध साहित्य का अध्ययन

3) अध्ययन क्षेत्र में अनुभव प्राप्त व्यक्तियों से विचार-विमर्श

R.L. Ackoff का कहना है कि शोध-समस्या का चयन करते समय शोधकर्ता उपभोक्ताओं, इससे प्रभावित व्यक्ति के उद्देश्यों, उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वैकल्पिक साधनों, विकल्पों के बारे में अनुसंधान, उपभोक्ता के मन में संदेह की स्थिति तथा इनसे उत्पन्न समस्याओं तथा समस्या को प्रभावित करने वाले पर्यावरण को ध्यान में रखना चाहिए। Ackoff ने अपनी पुस्तक The Design of Social Research में अध्ययन समस्या के निर्धारण के लिए पांच आवश्यकताओं को चिह्नित किया है:

1) सर्वप्रथम ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह होना चाहिए जिनसे संबंधित समस्या का अध्ययन किया जाना है। यह समूह उस शोध का प्रयोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए करता है तो वह उसे "शोध उपभोक्ता" (Research Consumers) का नाम दिया जा सकता है।

2) इस शोध-उपभोक्ता समूह की कुछ आवश्यकताएँ होनी चाहिए, क्योंकि बिना आवश्यकता के किसी समस्या का जन्म नहीं हो सकता है।

3) वैकल्पिक साधनों का अस्तित्व होना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु शोध उपभोक्ता समूह के सम्मुख यह शंका होनी चाहिए कि उनको कौन से विकल्प का चयन करना है।

4) इस उपभोक्ता समूह के सम्मुख अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वैकल्पिक साधनों की उपलब्धि होनी चाहिए। इन वैकल्पिक साधनों के कम से कम दो प्रकार होने चाहिए, क्योंकि यदि उसके सम्मुख कोई विकल्प नहीं है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी कोई समस्या नहीं है।

Scanned with CamScanner

5) प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में दो या दो से अधिक पर्यावरणों की उपस्थिति भी अनिवार्य है ताकि संबंधित पर्यावरण में परिवर्तन किसी समस्या को समाप्त करें अथवा नई समस्या को प्रस्तुत करे।

उपरोक्त के बारे में जानकारी दो स्रोतों से प्राप्त की जा सकती है — 1. पूर्व अध्ययनों, प्रलेखों, पत्र-पत्रिकाओं, रिपोर्टों आदि लिखित सामग्री से तथा 2. विषय के बारे में जानकार व्यक्तियों से वार्तालाप करके (अन्वेषणात्मक अध्ययन द्वारा)। इन सारी जानकारियों व अध्ययन पक्षों का निर्धारण शोधकर्ता को यह निश्चय करने में भी मदद करता है कि उसके अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र (geographical area) क्या होगा, उत्तरदाता कौन होंगे, उनसे किस प्रकार के तथ्य कैसे संकलित किए जायेंगे और उनका विश्लेषण किन प्रमुख कारकों के आधार पर किया जायेगा।

अतः अनुसंधान के क्रम में शोध-समस्या या शोध के विषय का चयन एक महत्वपूर्ण कदम है और शोधकर्ता को शोध-विषय के चयन में सावधानीपूर्वक निर्णय लेने की जरूरत है ताकि शोध निष्कर्षों अथवा सिद्धांतों को व्यापक स्वीकृति मिल सके।

—x—

Scanned with CamScanner